

त्रैमासिक हिंदी ई-पत्रिका लेखापरीक्षा ज्ञानोदय

सत्रहवां संस्करण

हिंदी पखवाड़ा समारोह विशेषांक



कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

सी 25, 8 वी मंजिल, ऑडिट भवन, बीकेसी, बांद्रा पूर्व, मुंबई - 400 051

फैक्स-02226573814, ई-मेल pdcamumbai@cag.gov.in



हिंदी दिवस 2024

के अवसर पर
माननीय गृह मंत्री जी
का संदेश



राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय, भारत सरकार

**अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार**



प्रिय देशवासियो!

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह विशेष है, क्योंकि 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा इसे 'राजभाषा हीरक जयंती' के रूप में मनाया जा रहा है।

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। अतः हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को भारतीय अस्मिता का प्रतीक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिंदी ने तब से लेकर आज तक, देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सदभावना को सुदृढ़ करने का महती कार्य किया है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण उन दिनों हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वालों में लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, राजगोपालाचारी एवं अन्य गैर-हिंदीभाषी महानुभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। आजादी के बाद हिंदी की इसी सर्वसमावेशी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया।

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें आपको देश की कई भाषाओं के तत्व मिल जाएँगे। इसका इतिहास लिखने वालों ने तो रासो ग्रंथों, सिद्धों-नाथों की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खड़ी बोली तक इसकी परम्परा को माना है। कवि चंदबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंडाल, गुरु नानकदेव जी, संत रैदास, कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोकभाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है, जो गायन-वादन के द्वारा इस भाषा के आदिरूपों को जन-जन तक पहुँचाते रहे। हिंदी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवाती, गुजराती, छत्तीसगढ़ी, बघेली, कुँमाउनी, गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से ही तो बनी है। मुझे खुशी है कि हिंदी भाषा इन मातृभाषाओं को अक्षुण्ण रखते हुए आगे बढ़ रही है और लगातार विकसित हो

रही है। आज जब राजभाषा के रूप में हिंदी अपनी 75वीं वर्षगाँठ पूरी कर रही है, तब हमें इसका यह इतिहास जरूर याद रखना चाहिए।

14 सितंबर, 1949 से लेकर लगातार राजभाषा के रूप में हिंदी के संवर्धन के अनेक काम हुए हैं। राजभाषा विभाग की विशाल यात्रा को पीछे मुड़ कर देखें, तो हमें कई महत्वपूर्ण पड़ाव दिखाई देते हैं, जहाँ इस विभाग ने जिम्मेदारीपूर्वक सरकारी तंत्र को भाषिक चेतना के प्रति प्रेरित किया है।

साल 1977 में श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित कर राजभाषा का मान बढ़ाया। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी भाषा में संबोधन देते हैं और भारतीय भाषाओं के उद्धरण देते हैं, तो समूचे देश में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव को और बल मिलता है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने राजभाषा को और भी समृद्ध व सक्षम बनाने के हर संभव कार्य किए हैं। 2018 में अनुवाद टूल कंठस्थ का लोकार्पण हो, 2020 में भारत की नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को विशेष महत्व देने की अनुशंसा हो, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए विधेयक पारित करना हो, 2022 में हिंदी दिवस पर कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण हो या साल 2021 से हर साल हिंदी दिवस पर 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' आयोजित करना हो, सरकार राजभाषा व भारतीय भाषाओं के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध है। साथ ही, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन का 12वाँ खंड भी माननीय राष्ट्रपति महोदया को सौंप दिया है।

राजभाषा में कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु हमने साल 2022 से संशोधित राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शुरू की है जिसके तहत ज्ञान-विज्ञान, अपराध शास्त्र अनुसंधान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर एवं विधि के क्षेत्र में राजभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार दिए जाते हैं। साथ ही, राजभाषा विभाग ने डिजिटल शब्दकोश 'हिंदी शब्द सिंधु' का निर्माण भी किया है।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जाए। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जनभाषा के बीच की दूरी को पाटें, ताकि देश के हर वर्ग का नागरिक देश की प्रगति से परिचित भी हो और लाभान्वित भी। इस तरह 'आत्मनिर्भर भारत' व 'विकसित भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी भारतीय भाषाओं की सशक्त भूमिका रहने वाली है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी दिवस एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह, मातृभाषाओं के प्रति राजभाषा विभाग की प्रतिबद्धता को और भी ऊँचाई देने का सार्थक माध्यम बनेगा। मैं राजभाषा विभाग के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

वंदे मातरम!

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2024


(अमित शाह)

लेखापरीक्षा ज्ञानोदय परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री बिरेन दिनेशचंद्र परमार

महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा

संरक्षक

श्री सागर विजय काळे, उप निदेशक/मुख्यालय

संपादक-मंडल

श्रीमती स्वपना फुलपाड़िया

श्रीमती मीना देशप्रभु

श्रीमती विद्या मुरलीधरन

श्रीमती कल्पना असगेकर

सुश्री पूजा साव

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

पर्यवेक्षक

कनिष्ठ अनुवादक

(रचनाओं की मौलिकता एवं विचार से संबंधित पूर्ण उत्तरदायित्व रचनाकारों का है-संपादक मंडल)

अनुक्रमणिका	
संदेश	बिरेन दिनेशचंद्र परमार, महानिदेशक
संदेश	श्री अनुपम जाखड़, उप निदेशक, उप-कार्यालय देहरादून
संदेश	श्री सागर विजय काळे, उप निदेशक/मुख्यालय
संपादकीय	सुश्री पूजा साव
पते की पहचान (यात्रा)	श्री अनिल सिंह रावत, उप-कार्यालय देहरादून
अमन	श्री अनिल सिंह रावत, उप-कार्यालय देहरादून
नारी सुरक्षा: वर्तमान की आवश्यकता	श्री विनोद कुमावत
बाढ़ में फंसी हुई चार्मिस - एक साहसी यादगार पिकनिक	श्रीमती अक्षता पावड़े
चुटकुले - हंसी के फंवारे	श्रीमती अक्षता पावड़े
डिजिटल ब्यूटी पार्लर	श्री अरूण कुमार साव, उप-कार्यालय देहरादून
बुलंद आवाज	श्री इमरान खाटीक
बदरी दर्शन	श्री हरी सिंह, उप-कार्यालय देहरादून
दोस्ती की कहानी अजनबियों को है सुनानी	सुश्री फातेमा हवेलीवाला
हिंदी पखवाड़ा आयोजन	
आपके पत्र	

संदेश



यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यालय द्वारा तिमाही हिंदी ई-पत्रिका “लेखापरीक्षा जानोदय” के 17वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को गति प्रदान करने तथा अपनी राजभाषा के लिए गौरवपूर्ण वातावरण तैयार करने में कार्यालयीन पत्रिकाओं का काफी योगदान होता है।

भारतीय संविधान द्वारा राजभाषा के रूप में मान्यता प्राप्त हिंदी के प्रति हम सभी का यह दायित्व है कि कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का प्रयोग करने के साथ-साथ इसके प्रचार-प्रसार हेतु यथासंभव प्रयास करें। हिंदी का स्वरूप कठिन तथा जटिल तब हो जाता है जब हिंदी में मूल कार्य न करके अनुवाद का प्रयोग किया जाता है। अतः कार्यालय में अन्य भाषाओं के सहज एवं प्रचलित शब्दों का भी प्रयोग करना चाहिए जिससे यह प्रत्येक व्यक्ति के मन तक अपनी पहुंच बना सके। सभी कार्मिकों को राजभाषा हिंदी के विकास हेतु अपना यथासंभव योगदान देना चाहिए।

अंत में मैं उन सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को धन्यवाद देता हूं जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से पत्रिका के 17वें अंक को सफल बनाने में सहयोग किया है। प्राप्त रचनाओं के सुंदर प्रस्तुतीकरण हेतु संपादकीय मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

मुझे आशा है कि हम सभी एक साथ मिलकर पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास हेतु सदैव प्रयत्नशील रहेंगे।

(श्री बिरेन दिनेशचंद्र परमार)

महानिदेशक

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

संदेश



मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि कार्यालय द्वारा तिमाही हिंदी ई-पत्रिका “लेखापरीक्षा ज्ञानोदय” के 17वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह प्रकाशन कार्यालय के राजभाषा के विकास के प्रति उत्साह को प्रदर्शित करता है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में पत्रिकाओं का प्रकाशन अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है।

कार्यालय के इस कार्य की सराहना करते हुए हिंदी के प्रोत्साहन के लिए लगातार ऐसे प्रयास चलते रहें, ऐसी कामना करता हूँ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादकीय मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(अनुपम जाखड़)

उप निदेशक

उप कार्यालय, निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, देहरादून

संदेश



यह प्रसन्नता का विषय है कि कार्यालय राजभाषा हिंदी के विकास में एक और कदम बढ़ाते हुए तिमाही हिंदी ई-पत्रिका “लेखापरीक्षा ज्ञानोदय” के 17वें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में पत्रिकाओं का योगदान महत्वपूर्ण है। पत्रिकाएं अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मन में राजभाषा के प्रति रुचि उत्पन्न करती हैं तथा राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन हेतु जारी निर्देशों से अवगत कराती है।

हिंदी एक सहज भाषा है। कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को सरल बनाने हेतु अन्य भाषा के प्रचलित शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए। अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों के प्रयोग से कार्मिकों में रुचि जागृत होती है तथा हिंदी की शब्दावली में भी वृद्धि होती है। आवश्यकतानुसार इलेक्ट्रॉनिक साधनों का प्रयोग करके राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाया जा सकता है। हमारे कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने हेतु पत्रिकाओं के प्रकाशन के साथ-साथ विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। हमारे संयुक्त प्रयासों से राजभाषा हिंदी के विकास हेतु सार्थक परिणाम प्राप्त होंगे।

पत्रिका के इस अंक के सफल प्रकाशन में सहयोग करने वाले समस्त रचनाकारों को धन्यवाद तथा संपादकीय मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

मैं यह आशा करता हूं कि पत्रिका “लेखापरीक्षा ज्ञानोदय” का 17वां अंक आप सभी के लिए रुचिकर एवं ज्ञानप्रद होगा।

(सागर विजय काळे)

उप निदेशक/मुख्यालय

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई



संपादकीय

हमारे कार्यालय की तिमाही हिंदी ई-पत्रिका “लेखापरीक्षा ज्ञानोदय” का 17वां अंक आप सभी के समक्ष सादर प्रस्तुत है। यह पत्रिका हम सभी के सम्मिलित प्रयासों का ही परिणाम है। राजभाषा हिंदी के विकास हेतु पत्रिका का प्रकाशन एक सार्थक प्रयास है। पत्रिकाएं कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी के प्रति रुचि जागृत करने के साथ-साथ छुपी हुई सृजनात्मक प्रतिभाओं को उजागर करने के लिए सार्थक सिद्ध होती है।

हिंदी भाषा का प्रयोग राष्ट्रीय स्तर के साथ-साथ अब अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी बढ़ रहा है। हिंदी भाषा में अन्य भाषाओं के शब्दों को ग्रहण करने की अद्भूत क्षमता है जो इस भाषा की सबसे बड़ी शक्ति है। हिंदी का प्रयोग तीव्र गति से बढ़ रहा है तथा हमारे सहयोग के फलस्वरूप राजभाषा को उचित स्थान अवश्य प्राप्त होगा।

सभी उच्च अधिकारियों के प्रति हार्दिक आभार जिनके प्रोत्साहन एवं सहयोग के फलस्वरूप पत्रिका का सफल प्रकाशन किया जा सका है। सभी रचनाकारों को सादर धन्यवाद जिन्होंने अपने रचना कौशल को प्रदर्शित करते हुए अपनी रचनाओं को पत्रिका में शामिल करने हेतु प्रस्तुत किया है। आप सभी से अनुरोध है कि पत्रिका के आगामी अंकों के लिए भी आप अपना सहयोग देते रहें।

आशा है कि पूर्व अंकों की तरह पत्रिका का यह अंक भी पाठकों के लिए रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक होगा। पाठकों से हमारा यह विनम्र अनुरोध है कि पत्रिका को पढ़ने के पश्चात अपने अमूल्य विचारों से हमारा उत्साहवर्धन करें तथा अपने विचारों से हमें अवगत कराएं।

पूजा साव
कनिष्ठ अनुवादक



श्री अनिल सिंह रावत
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी,
उप-कार्यालय, देहरादून

पत्ते की पहचान (यात्रा)

चहचहाती पक्षियों की, मधुर धुन की ताल पर
छोड़कर तन को अपने, आ गया जमीन पर
और हवा के साथ उसने, सैर की इस जहान की
थक के पहुंचा सुस्ताने को, वो जलध की धार पर
चहचहाती पक्षियों की, मधुर धुन की ताल पर
छोड़कर निकला था घर से, उस अधुरी राह पर
जिसको देखा था अधुरा, लिपटे तन की छाल पर
मन की अभिलाषा पूर्ण करने, छोड़ दिया घर-बार को
बिन बताये चुपके-चुपके, जल की तेज फव्वार पर
चहचहाती पक्षियों की, मधुर धुन की ताल पर
देखकर छटा जमी की, खुश हुआ बहुत मगर
साथ बिछुड़ने का कुटुंब से, मन में आता बार-बार
गर्व होता फिर से उसको, और होता खुश अपार
पहुँचाता किनारे चींटियों को, तन पे लेकर वो सवार
चहचहाती पक्षियों की, मधुर धुन की ताल पर
एक क्षण लगा उसे कि, प्राण बस आये बाहर
जब नीर की तेज धारा, विलय हुई समुंद्र पर
देखा डरकर अपने तन को, अचरजी निगाहों से
खुश हुआ फिर देखकर, चींटी भी थी तन पर सवार
चहचहाती पक्षियों की, मधुर धुन की ताल पर



श्री अनिल सिंह रावत
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी,
उप-कार्यालय, देहरादून

अमन

मेरे देश में फिर से, अमन का विगुल बजेगा
पड़ोसी चाहे लगा दे, दिलों में आग नफरत की
जला दे झोपड़ी वो चाहे, किसी भी हिंदू मुस्लिम की
नई झोपड़ी मैं फिर उसे, हिंदू मुस्लिम ही मिलेगा
मेरे देश में फिर से, अमन का विगुल बजेगा
वो चाहे मंदिर गिरा दे, चाहे गिरा दे मस्जिद
टूटे मंदिर मस्जिद में उसे, हिंदू मुस्लिम ईट लगाते मिलेगा
मेरे देश में फिर से, अमन का विगुल बजेगा
करे चाहे आक्रमण दुश्मन, जितनी भी ताकत के बल पर
ले आए वो चाहे अनगिनत, हथियार विध्वंसक नए ज़माने के
हर एक मोड़ पर उसे, वीर अब्दुल हामिद मिलेगा
मेरे देश में फिर से, अमन का विगुल बजेगा
बनी है देश की बुनियाद, लहू से उन जवानों के
हिलाने को जिसे फिर से, न कोई शूरवीर मिलेगा
आज भी हिंदू मुस्लिम में उसे, शहीदों का ही लहू मिलेगा
मेरे देश में फिर से, अमन का विगुल बजेगा



श्री विनोद कुमार कुमावत
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

नारी सुरक्षा: वर्तमान की आवश्यकता

वर्तमान की महिला उत्पीड़न की घटनाओं से मन उद्वेलित है। पहले निर्भया कांड व हाल ही में कलकत्ता मेडिकल कॉलेज के मामले ने आमजन के मन को फिर से विचलित कर दिया है। इस घटना ने हमारे प्राचीन संस्कारों व संस्कृति तथा वर्तमान की पाश्चात्य संस्कृति व प्रभाव में अंतर करने को मजबूर कर दिया है।

वैदिक काल में जहां स्त्रियों को बराबरी का दर्जा प्राप्त था और उनमें से कई तो महान विदूषी भी हुईं। यहां तक कि महिलाओं को सम्मान के साथ पुरुषों के बराबर यज्ञों में भाग लेने का अधिकार भी प्राप्त था।

महाभारत व रामायण तो पूरी तरह से स्त्री के सम्मान के इर्द-गिर्द ही घूमती हैं। जहाँ महाभारत में द्रोपदी के चीर-हरण ने महाभारत जैसे युद्ध को जन्म दिया, वहीं सीता-हरण ने रावण की मृत्यु को सुनिश्चित कर दिया था।

मध्यकाल में भी हमारे राजा-महाराजाओं व रानियों ने स्त्री-सम्मान व मातृभूमि के लिए जौहर व केसरिया जैसे वीरतापूर्वक कार्य किए और कभी भी अपने मान-सम्मान को आक्रांताओं के आगे समर्पित नहीं किए।

लेकिन वर्तमान समाज जो पाश्चात्य संस्कृति के संपर्क से अपने आपको सभ्य कहता है क्या वह वास्तव में सभ्य हुआ है? यह सोचने का विषय है.....

माना कि पाश्चात्य शिक्षा व संस्कृति वर्तमान वैज्ञानिक युग की आवश्यकता है परंतु साथ ही इस पाश्चात्य शिक्षा व संस्कृति ने भौतिकवाद जैसी अवधारणा को भी विकसित किया है जिससे मनुष्य के सारे नैतिक मूल्य व संस्कार धूमिल होते जा रहे हैं। इन नैतिक मूल्यों के पतन के फलस्वरूप मानव दानवीय प्रवृत्ति की तरफ अग्रसर हो रहा है जिसके कारण आज हमें हमारे समाज में आए दिन दुष्कर्म, बलात्कार, उत्पीड़न, दहेज हत्या, तलाक आदि सामाजिक घटनाएं देखने को मिलती हैं।

आज से 15 वर्ष पूर्व तक ग्रामीण अंचलों में लड़के-लड़कियां साथ-साथ भेड़-बकरियां चराने जाते थे, स्कूल जाते थे, साथ-साथ खेल खेलते थे तथा गांव की हर लड़की पूरे गांव की बहिन या बेटी समझी जाती थी लेकिन वर्तमान समय के बढ़ते भौतिकवाद ने तो गांवों को भी पीछे छोड़ दिया है और आज तो लड़कियां/महिलाएं अपने घरों में भी सुरक्षित नहीं हैं।

कलकत्ता मेडिकल कॉलेज की घटना के बाद एक बार फिर से इस मुद्दे ने पूरे देश की जनता, देश की व्यवस्थापिका व न्यायपालिका को विचलित किया है तथा इसके उपचारात्मक केंद्र व राज्यों को आवश्यक कदम उठाने के निर्देश दिए हैं, लेकिन मेरा मत इस मुद्दे पर भिन्न है तथा मेरा मानना है कि हमें उपचारात्मक उपायों के बजाय सुधारात्मक उपायों की तरफ ध्यान देना चाहिए क्योंकि उपचारात्मक उपाय हमेशा कोई घटना घटित होने के बाद लिए जाते हैं जबकि सुधारात्मक कदमों से पतन की ओर अग्रसर हो रहे हमारे नैतिक मूल्यों को जीवंत कर तथा हमारे पुरातन नैतिक मूल्यों को संस्थापित करके ऐसी निंदनीय घटनाओं पर लगाम लगा सकते हैं।

मुख्यतः हमारी व्यवस्थापिका का दोष तो यह है कि वह ऐसी घटनाओं को रोकने व सजा देने हेतु कानून तो बनाती है लेकिन ऐसे कानूनों का कभी प्रचार-प्रसार नहीं करती और जो बुद्धिहीन, अविवेकी लोग ऐसी घटनाओं को अंजाम देते हैं उन्हें तो उस कानून व सजा के बारे में पता भी नहीं रहता है।

अतः सरकार को ऐसी घटनाओं की रोकथाम हेतु प्रभावी कानून बनाने के साथ-साथ जन-जन में इनके प्रचार-प्रसार करने की आवश्यकता है। इसके अलावा स्कूली शिक्षा व विश्वविद्यालयी शिक्षा के स्तर पर हमारी पुरातन संस्कृति को स्थापित किया जाना चाहिए और भौतिकवादी संस्कृति को भारतीय संस्कृति के नैतिक मूल्यों से विस्थापित किए जाने की आवश्यकता है।



श्रीमती अक्षता पावड़े

सहायक पर्यवेक्षक

बाढ़ में फंसी हुई चार्मिस - एक साहसी यादगार पिकनिक

साल 2019, पूरा जून एवं जुलाई माह लगभग सूखा ही था, बहुत ही हल्की-हल्की बारिश हो रही थी। हमारे कार्यालय से हम सब चार्मिंग महिलाओं ने बारिश में शहाड, कल्याण, महाराष्ट्र में नदी किनारे स्थित एक रिसोर्ट में जुलाई में जन्मदिन वालों का जन्मदिन का जश्न और इसी बहाने बारिश में पिकनिक मनाने की योजना बनाई। हम सब चार्मिस में (चार्मिस - हमारे महिलाओं के ग्रुप का प्यारा नाम) पिकनिक पर जाने का उत्साह छा गया।



दिनांक 26 जुलाई, 2019 शुक्रवार शाम को 13 चार्मिस आधे दिन की छुट्टी देकर कार्यालय से ही पिकनिक पर निकल पड़ी। इतने दिन से बारिश का अता पता नहीं था लेकिन पिकनिक के दिन बारिश ने हल्की-हल्की शुरुवात की थी। हम सबने भीगते-भीगते हुए ट्रेन पकड़ी। उस दिन मेरा जन्मदिन था। सभी चार्मिस ने बहुत प्यार से मेरा एवं मेरी एक मैडम का जन्मदिन ट्रेन में मनाया। पिकनिक का उत्साह जैसे हम सबके चराचर में समा गया था। पिकनिक की शुरुवात ही पूरे उत्साह से हो रही थी। कार्यालय की लगभग 75% चार्मिस उस दिन जा रहे थे, थोड़े जन अगले दिन सुबह आने वाले थे। आखिरकार हम सब हंसी मजाक करते-करते मस्ती के मूड में शाम 5 बजे रिसोर्ट में पहुँच गए।



वहां का मनोरम दृश्य देखकर मन बहुत प्रसन्न हुआ। नदी किनारे हल्की सी बारिश में गरमागरम बटाटा वड़ा, कांदा भजी और उपर से अदरक वाली चाय पीकर हम सब चार्मिस का मन एकदम खुश हुआ। नदी से रिसोर्ट शायद 2 मंज़िल की ऊंचाई पर था। नदी में ज्यादा पानी नहीं था, इसलिए मन मे कतई शंका नहीं थी कि इसी नदी का महारौद्र रूप भी हमें देखने मिलेगा। फिर हम सभी ने नदी के किनारे अलग-अलग पोज़ में फोटोशूट किया। हमारा उत्साह पल-पल द्विगणित हो रहा था ।



करीब 7 बजे के आस-पास बारिश ने थोड़ा उग्र रूप धारण करना शुरू किया, रिसोर्ट के सिवाय सब जगह अंधेरा दिख रहा था। हमारी 2 चार्मिस कार्यालय से लेट निकलकर आने वाली थी इसलिए हम सब उनका इंतजार कर रहे थे। बारिश और तेजी से आने लगी। तभी 2 चार्मिस का फ़ोन आया कि उन्हें रिकशा वाला बीच रास्ते में छोड़कर चला गया और वे रास्ते में फंसे हैं। तब हमने रिसोर्ट के मैनेजर को उन्हें लाने की व्यवस्था करने के लिए बोला। थोड़ी देर में 2 चार्मिस को मैनेजर लेकर आया। वे डर के मारे रो-रो कर पूरी बेहाल हुई थी क्योंकि सुनसान रास्ते पर रिकशा वाला उन्हें अकेले अनजान जगह पर छोड़कर चला गया था, ऊपर से तेज बारिश, नीचे पानी का तेज बहाव और आस-पास घना अँधेरा। न कोई घर, न कोई दुकान, ना कहीं पर लाईट। भगवान

की कृपा से रिसोर्ट मैनेजर से उनकी मुलाकात हुई और वे सही सलामत पहुंचे। वे थोड़ा रिलैक्स होने के बाद रात को 9 बजे हम सभी ने डिनर का आनंद उठाया और फिर से पिकनिक मूड में चले गए।



मध्यांतर (हिंदी सिनेमा जैसे):

रात को 11 बजे हम सब अपने रूम में अंताक्षरी, दम शेरस खेलने लगे। हंसी मजाक जोर ले ही रहा था कि हमारी एक चार्मी ने बोला कि बाहर बारिश बहुत तेज हो रही है। हमारा रिसोर्ट नदी किनारे है और उसे चिंता हो रही है। तब हम सबने उन्हें कहा कि नदी तो कितने नीचे है, कुछ नहीं होगा और फिर से हमारा हंसी मजाक चालू हुआ। लगभग रात के 11.30 बजे एक चार्मी ऐसे ही रूम के बाहर गई तो क्या देखा..... पूरे रिसोर्ट में पानी भरना चालू हुआ था। सब कर्मचारी सामान हटा रहे थे, भाग-दौड़ चालू थी।

बाहर का नजारा देखकर हम सब डर गए। बारिश रुकने का नाम नहीं ले रही थी। आहिस्ता-आहिस्ता हमारे पहले मंजिल पर स्थित रूम तक पानी भरने लगा। रिसोर्ट का निचला हिस्सा थोड़ा-थोड़ा करके पूरा पानी में डूब गया। तब हम ऊपर के एवं अंतिम मंजिले पर सामान लेकर चले गए। वहां पर एक दूसरे कार्यालय के 7-8 लोगों का ग्रुप हमारे जैसे ही पिकनिक मनाने आया था। अब सब जगह डर फैला हुआ था। बिजली चली गयी थी। रिसोर्ट के आस-पास सिर्फ तेज बारिश की आवाज और घना अँधेरा ही था। पूरी रात हम सब भगवान का नाम लेकर बैठे रहे। किसी को भी नींद नहीं आई। रातभर मदद के लिए सबको फ़ोन करते रहे।



सुबह होने के बाद बाहर का नजारा देखकर तो हमारे होश ही उड़ गए। चारों तरफ सिर्फ पानी ही पानी, रिसोर्ट का निचला हिस्सा पानी में पूरा डूब गया था। बड़े-बड़े नारियल के पेड़ों का सिर्फ ऊपर का थोड़ा हिस्सा ही दिख रहा था। आनंद, उत्साह की जगह अब भयानक डर ने ली थी।

टीवी पर समाचार देखकर घर वाले भी डर गए थे। अब मोबाइल की बैटरी बचाने के लिए किसी को ज्यादा फोन नहीं कर रहे थे। हमारी भूख प्यास पूरी तरह से खो गयी थी। तेज बारिश रुकने का नाम नहीं ले रहा था। दोपहर के बाद बारिश थोड़ी सी कम हुई तो हम सब थोड़े खुश हुए, लेकिन थोड़ी ही देर में बारिश ने फिर से जोर पकड़ा।



वहां से नजदीक बदलापुर स्टेशन में बाढ़ में ट्रेन फ़सने के कारण हमारे यहाँ पर NDRF एवं अन्य सरकारी मदद नहीं आ पा रही थी। हम वैसे तो इमारत में ऊंचाई पर सुरक्षित होने के कारण सभी मदद की जरूरत दूसरी जगहों पर था। यहां पर पानी का बहाव एक-एक सीढ़ी ऊपर चढ़ रहा था। बारिश थोड़ी-थोड़ी विश्रांति लेने के बाद फिर से जोर पकड़ रही थी। नदी के पानी के तेज बहाव के कारण कोई बचाव कार्य हमारे रिसोर्ट के नजदीक नहीं आ पा रहा था। हमें बचाने के लिए आने वाले सेना को रास्ते में दूसरे फंसे हुए लोग मिलने के बाद वे उन्हें बाढ़ से बाहर लेकर जाते थे।

अब दोपहर के लगभग 2 बज गए थे, तभी हमें रिसोर्ट से बाहर निकालने के लिए ऊपर एक हेलीकॉप्टर चक्कर काटने लगा, उसे देखकर हम सब खुश हुए। सिर्फ अतिआवश्यक सामान की बैग लेकर हेलीकॉप्टर में चढ़ने के साहस के लिए कतार में खड़े हुए। लेकिन डर के मारे अपने-अपने हाथ पर बड़े बड़े अक्षरों में नाम लिखा क्योंकि यदि पानी में गिर जाये तो पहचान के लिए,

लेकिन हेलीकॉप्टर की खुशी भी ज्यादा देर तक नहीं रही, हमारे रिसोर्ट को छत नहीं होने की वजह से हेलीकॉप्टर हमारे सामने की बिल्डिंग में फंसे हुए लोगों को लेकर गया।

अब शाम के 4 बज गए थे। थोड़ा-थोड़ा अँधेरा होने लगा था। बारिश रुकने का नाम नहीं ले रहा था। सभी के मोबाइल फ़ोन डेड हो रहे थे। अब हम सब मायूस होकर रूम में बैठकर भगवान का नाम स्मरण करने लगे। कोई महामृत्युंजय जप, तो कोई ॐ नमोः शिवाय, तो कोई अपने-अपने भगवान का जाप करने लगे।



अगर 27 जुलाई की रात वहां पर गुजरानी पड़ी तो क्या होगा, ये सोचकर सभी के रोंगटे खड़े हो गए। हम सब पूरी तरह से मायूस हो गए थे। तभी भगवान की और हमारी बड़ी मैडम की कृपा से शाम के 4.30 बजे हमें बाहर निकालने के लिए NDRF की फ़ौज 2 नावों में बैठकर आई। अपनी बहादुर सेना के नौजवानों को देखकर उनमें भगवान दिखाई दिया, उन्हें देखकर असली हीरो का अर्थ मालूम पड़ा और जान में जान आ गई।

फिर शाम को 5 बजे 2 बोट हम सबको लेकर निकल पड़ी। बोट नीचे फंसे हुए बस, ट्रक से टकरा रही थी। जैसे ही बोट हिलती थी, हम सब गिरने के डर से पसीना-पसीना हो जाते। कैसे-कैसे 15 मिनट के बाद हम ऊंचाई पर पहुंचे, वहां पर स्थानीय लोगों ने हमें बाहर निकाल लिया।

जवानों के बाद वहां के स्थानीय एक विद्यालय में रहने का बंदोबस्त किया गया। अब बारिश लगभग रुक ही गई थी और रात भर में बाढ़ का पानी भी पूरा गायब हुआ था। नदी फिर से शांत लग रही थी, रिसोर्ट पूरा कीचड़ से भरा हुआ था।



सुबह हमें बाढ़ का कारण पता चला कि ज्यादा बारिश के कारण वहां के नजदीकी जल बांध से पानी नदी में छोड़ दिया था एवं सामने से भी एक नदी का पानी का प्रवाह हमारे रिसोर्ट की तरफ होने के कारण और ऊपर से बादल फटने जैसी बारिश से पूरा इलाका जलमय हो गया था।

विद्यालय में एक रात रहकर हम सब चार्मिस सुबह अपने-अपने घर लौट गए। घर जाते ही अपनों से मिलने की खुशी को लब्जों में व्यक्त नहीं कर सकते।

देश की सीमा पर तैनात जवान, नैसर्गिक एवं दूसरी आपत्ति में अपनी सुरक्षा के तत्पर NDRF के जवान, आर्मी के जवान एवं पुलिस ये सभी अपनी जान पर खेलकर हम जनता की सुरक्षा के लिए हाजिर होते हैं। इन सभी असली हीरों को हम सब का कोटि कोटि प्रणाम !!

तो ऐसी रही हम चार्मिस की बारिश में हमेशा के लिए एक साहसी यादगार पिकनिक !!!!!!!



श्रीमती अक्षता पावड़े

सहायक पर्यवेक्षक

चुटकुले - हंसी के फंवारे

आजकल की तनाव से भरी जिंदगी में हंसी का बहुत बड़ा योगदान है। इंसान को मानसिक तनाव से दूर रखने में हंसी की बड़ी भूमिका होती है। इस तनाव से हार्ट अटैक की समस्या स्कूल में पढ़ते बच्चों तक पहुँच चुकी है तथा मानसिक बीमारियाँ भी बहुत बढ़ रही हैं। अगर आप छोटी-छोटी बातों पर हमेशा हंसते रहते हैं, तो मानसिक तनाव से होने वाली गंभीर बीमारियों से बच सकते हैं। हमारे आसपास छोटी छोटी घटने वाली किस्सों को हम हंसने की वजह बना सकते हैं। हंसने के लिए इंसान को किसी खास मौके को ढूँढ़ने की जरूरत नहीं है। इंसान कभी भी कहीं भी किसी के साथ भी हंस सकता है। इसमें उम्र की कोई पाबंदी नहीं है। अब जिंदगी का आधा पड़ाव गुजर जाने पर पता चला है कि हम पहले छोटी-छोटी बातों पर बेवजह नाराज रहते थे और अनचाहा टेंशन लेते थे। अब उन्हीं बातों पर हंसी आती है। तनाव दूर करने के लिए दोस्तों से मिलिए, हरियाली में घूमने जाइये, कॉमेडी शो/सिनेमा देखिये, घर के बुजुर्गों के साथ वक्त बिताएं। उनके अनुभवों से सीखने की कोशिस करें तथा आपके कुछ भी मनपसंद शौक पूरे कीजिये, जिससे आपको अच्छा लगे। बच्चों को भी सिखाइये कि कभी सुख कभी दुःख इसका नाम जिंदगी है। अगर भोजन की थाली में सिर्फ मिठाई रहेगी तो खाना अच्छा नहीं लगेगा। उसमें तीखा, खट्टा

एवं मीठा सभी स्वाद रहेंगे तो ही खाने की थाली अच्छी लगेगी। वैसे ही जीवन में सुख, दुःख एवं संघर्ष सभी रहना जरूरी है, तभी तो सुख की कीमत मालूम पड़ेगी।

आप चाहें तो हंसने के लिए जोक्स और चुटकुलों की भी मदद ले सकते हैं। इसीलिए हम आपको हंसाने के लिए कुछ मजेदार चुटकुले लेकर आए हैं, जिन्हें पढ़ने के बाद आप अपनी हंसी नहीं रोक पाएंगे। तो आइए हम सब चलते हैं इस हंसने और हंसाने के सफर पर...

महिला- मेरा वेट कैसे कम होगा?

डॉक्टर- अपनी गर्दन को दाएं बाएं हिलायें।

महिला- किस समय?

डॉक्टर- जब कोई खाने को पूछे ।

पप्पू ने बताया एक नम्बरी डाइटिंग प्लान
ऐसी चीज़ों से दूर रहें जैसे कि वजन तोलने की मशीन,
शीशा, तस्वीरें और खास कर पतले दोस्त
जो आपको मोटा बनाती हों ।

ग्रीन टी से आपका वजन तब कम होगा
जब आप इनकी पत्तियां तोड़ने खुद पहाड़ पर जाओगे
तथा दुनिया की तमाम महिलाओं के लिए सबसे खुशी का क्षण
जब उन्हें कोई बोले आप पतले लग रहे हो ।

जिंदगी की भाग-दौड़ में अपनी सेहत का ख्याल रखें
ऐसा न हो कि आप तो आगे निकल जाये
लेकिन आपका पेट आपसे भी आगे निकल जाये ।

लड़की- सुन जानू, गूगल मेल होता है कि फीमेल...
लड़का- बेबी फीमेल होता है...

लड़की- क्यों..

लड़का- क्योंकि अपना सेंटेंस पूरा होने से पहले ही वो
उसका सजेशन देना शुरू कर देता है...

पप्पू शराब पीकर गाड़ी चला रहा था,
अचानक गाड़ी एक खंभे से टकरा गयी
पुलिस-बाहर निकल साले
पप्पू-माफ़ कर दो दरोगा जी
पुलिस-साले दारू पी के गाड़ी चलाता है, मुंह खोल
पप्पू-अरे नहीं साहब, पहले से खूब शराब पी रखी है और कितनी पिलाओगे।

प्रेमिका- मैं तुम्हारे लिए आग पर चल सकती हूं, नदी में कुद सकती हूं।
प्रेमी- मैं भी तुमसे बहुत प्यार करता हूं, क्या तुम मुझसे मिलने आ सकती हो।
प्रेमिका- पागल हो क्या, धूप देखी है कितनी तेज है, मैं काली पड़ गई तो।

प्रेमिका- तुमको पता है कल मेरा बर्थडे है
मुझे क्या गिफ्ट दोगे
प्रेमी - जो तुम चाहो मेरी जान
प्रेमिका- मुझे रिंग चाहिए
प्रेमी- ठीक है रिंग दूंगा पर उठाना मत, मेरा बैलेंस कम है।

एक आदमी ने फेसबुक पर स्टेटस डाला
आज गर्मी बहोत है तो छत पर सोऊंगा
तो फिर क्या,
फटाफट 15 मच्छरों ने उनके स्टेटस को लाईक किया।

एक मच्छर का बच्चा पहली बार उड़ा
जब वो उड़कर वापस आया तो
उसके बाप ने पूछा कैसा लगा बेटा?
बहुत अच्छा लगा पापा

मैं जहां भी गया, लोग तालियां बजा रहे थे ।

एक आदमी को मच्छर के दिन में काटने पर

आदमी : अब दिन में भी

मच्छर : क्या करू घर में माँ बाप बीमार हैं,

जवान बहन की शादी करनी है ।

और लड़के वालों ने दहेज़ में एक लीटर खून माँगा है ।

पिंकी- तुम शराब में बहुत पैसे बर्बाद करते हो, अब बंद करो।

रोहन - और तुम ब्यूटी पार्लर में 5000 का कबाड़ा करके आती हो उसका क्या?

पिंकी- वो तो मैं तुम्हें सुंदर लगू इसलिए।

रोहन- पगली तो मैं भी तो इसलिए पीता हूँ कि तू मुझे सुंदर लगे।

टीचर- इतने दिन कहां थे, स्कूल क्यों नहीं आए?

गोलू- बर्ड फ्लू हो गया था मैम।

टीचर- पर ये तो पक्षियों को होता है इंसानों को नहीं।

गोलू- इंसान समझा ही कहां आपने... आप मुझे रोज मुर्गा तो बना देती हो !!

दादा और पोता आपस में बात करते हुए...

दादा- लगता है उस लड़की को लकवा हो गया है,

देख कैसे उसका एक हाथ ऊपर हो रहा है और मुंह पिचका सा हो गया है

पोता- दादाजी इसे लकवा नहीं हुआ वह सेल्फी ले रही है...

दो लड़कियां बस में सीट के लिए लड़ रही थीं

कंडक्टर- अरे क्यों लड़ रही हो,

जो उम्र में सबसे बड़ी है वो बैठ जाए

फिर क्या, पूरे रास्ते दोनों खड़ी ही रहीं ।

महिला- डॉक्टर साहब, मेरे पति नींद में

बातें करने लगे हैं! क्या करूँ?

डॉक्टर- उन्हें दिन में बोलने का

मौका दीजिए ।

वैलेंटाइन डे के 7 दिन पहले गिफ्ट शॉप पर वकील साहब गए.....

उन्होंने 40 खूबसूरत कार्ड खरीदे और सब पर उन्होंने लिखा, हैलो माय डियर, पहचान गए ना?

शाम को मिलो, आई लव यू

दुकानदार- ये क्या मामला है?

वकील साहब- पिछले वैलेंटाइन डे पर आसपास कॉलोनी में ऐसे ही 20 कार्ड भेजे थे।

कुछ ही दिन में तलाक के चार केस मिल गए थे, इस बार 40 कार्ड भेज रहा हूँ दुकानदार के उड़े होश!

डॉक्टर- जब तुम तनाव में होते हो क्या करते हो?

सोनू- जी, मंदिर चला जाता हूँ...

डॉक्टर- बहुत बढ़िया, ध्यान-व्यान लगाते हो वहां?

सोनू- जी नहीं, लोगों के जूते चप्पल मिक्स कर देता हूँ, फिर उन लोगों को देखता रहता हूँ...

उनको तनाव में देख कर मेरा तनाव दूर हो जाता है।

जज- तुम्हें तलाक क्यों चाहिए?

पति- जज साहब, मेरी पत्नी मुझसे लहसुन छिलवाती है, प्याज कटवाती है और बर्तन मंजवाती है

जज- इसमें दिक्कत क्या है?

लहसुन को थोड़ा गर्म कर लिया करो आसानी से छील जाएंगे,

प्याज को काटने से पहले फ्रिज में रखा दिया करो, काटने के समय आंखें नहीं जलेगी

बर्तन मांजने से 10 मिनिट पहले भरे टब में डाल दिया करो आसानी से साफ हो जाएंगे

पति- समझ गया हुज़ूर, अर्जी वापस ही दे दो मेरी...।

शांति भाभी ने निर्मला से कहा- इस महीने मैं अपने पति से थोड़ा कम लडूंगी

निर्मला - ऐसा क्यों

शांति भाभी- अब क्या करूं, फरवरी महीना ही 28 दिन का होता है...

संता (बंता से)- पूरी जिंदगी निकली जा रही है इसी इंतजार में,

कभी कोई टीचर मिलेगा तो एक बात उनसे जरूर पूछूंगा।

संता- क्या?

बंता- ये साइन थीटा, कॉस थीटा और टैन थीटा का यूज लाइफ में कब और कैसे करना है?

पत्नी ICU में थी। पति का रो-रोकर बुरा हाल था।

डॉक्टर- हम पूरी कोशिश कर रहे हैं, पर वह कुछ बोल ही नहीं रही है। शायद कोमा में है।

अब तो सब कुछ भगवान के हाथ में है।

पति बोल उठा- सिर्फ 40 की ही तो है अभी! तभी एक चमत्कार दिखा।

ECG और धड़कन बढ़ने लगी, पत्नी की उंगली हीली, होंठ हिले और आवाज आई 36 की ।

इसी के साथ अलविदा, आप सभी सदा हँसते और हँसाते रहे !!!!!

(चुटकुले का स्रोत: इंटरनेट)



श्री अरुण कुमार साव
कनिष्ठ अनुवादक
उप-कार्यालय, देहरादून

डिजिटल ब्यूटी पार्लर

शीर्षक देख अवश्य ही आपके मन में ये जिज्ञासा उत्पन्न हुई होगी कि ये डिजिटल ब्यूटी पार्लर क्या है? लेकिन इसमें अचरज की कोई भी बात नहीं है। आज का युग अत्याधुनिक युग है। इस युग में हर एक चीज़ डिजिटल हो गई है। खरीदारी से लेकर भुगतान तक हम डिजिटल माध्यम का उपयोग करते हैं। वहीं दूसरी ओर डिजिटल माध्यम से ही हम वार्तलाप (ई-मेल, विडियो कॉल, व्हाट्सएप्प, इत्यादि) भी करते हैं। मनुष्य के जीवन का हर एक हिस्सा डिजिटल माध्यम से जुड़ गया है।

अब हम शीर्षक की ओर दृष्टिपात करते हैं। आज हर एक कार्यक्रम में फ़ोटो खिचवाने का बहुत ही सुप्रसिद्ध प्रचलन है। ऐसे में फ़ोटो की सुंदरता अब महंगे मोबाइल पर निर्भर हो गयी है न कि वास्तविक सुंदरता पर। विभिन्न प्रकार के डिजिटल ब्यूटी एप्स का भी उपयोग लोग कर रहे हैं, जो फ़ोटो के रंग रूप को ही बदल कर रख देता है। फ़ोटो को विभिन्न एप्स के माध्यम से और सुंदर बनाकर प्रस्तुत किया जा रहा है। लोग अपनी तस्वीर को सोशल मीडिया में साझा करते

हैं। विभिन्न सोशल मीडिया एप्स जैसे फेसबुक, इंस्टाग्राम, स्नेपचैट पर भी अब फ़ोटो को फ़िल्टर करने का विकल्प है। इस फ़ोटो फ़िल्टर विशेषता का उपयोग किये बिना तो लोग अपनी फ़ोटो को शेयर ही नहीं करते हैं। लाइक्स और कमेंट्स उपयोगकर्ताओं के आत्मविश्वास को बढ़ाता है। उपयोगकर्ता रोमांचित होकर भिन्न-भिन्न प्रकार से पोज़ देकर सेल्फी लेते हैं और उन्हें अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर डालते हैं।



यहीं से आरंभ होती है डिजिटल ब्यूटी पार्लर की यात्रा। जी हाँ! सही सुना आपने। सबसे अलग दिखने की चाह में आज लोग डिजिटल माध्यम का भरपूर प्रयोग कर रहे हैं। अपने सुंदर दिखने के सपने को मोबाइल के ब्यूटी एप्स के जरिये पूरा कर रहे हैं, लेकिन प्रश्न यह उठता है कि क्या इस डिजिटल युग में वास्तविकता की जगह समाप्त हो जायेगी? क्या हम इतने आधुनिक हो गये हैं कि अपनी पहचान को भी फ़िल्टर कर दे रहे हैं? इस प्रश्न का उत्तर शायद हम सभी के पास उपलब्ध है। परंतु हम इसके इतने आदी और गुलाम हो गये हैं कि हम इसके बिना अपनी वास्तविक छवि को सोशल मीडिया में अपलोड ही नहीं करते हैं। फ़ोटो या विडियो (रील्स) में यदि फ़िल्टर नहीं लगा हो तो अन्य लोग इसे पसंद नहीं करेंगे। यही मुख्य वजह है कि आधुनिक रूप से पुरुष हो या महिला, बच्चे हो या बड़े सभी इस डिजिटल ब्यूटी पार्लर का भरपूर प्रयोग कर रहे हैं।

मजे की बात यह है कि इस डिजिटल ब्यूटी पार्लर का खर्च फ्री-फ्री और फ्री है। वैसे तो ब्यूटी पार्लर में जाने से काफी लंबा चौड़ा बिल बन जाता है, लेकिन इस डिजिटल ब्यूटी पार्लर में खर्च तो है ही नहीं और समय की भी बचत होती है। भला हो इस फेसबुकिया दुनिया का इसने तो लाइक्स और कमेंट्स के चक्कर में अपने वास्तविक स्वरूप को वास्तविक छवि को ही धर्म संकट में डाल दिया है।

Wow, beautiful, Awesome pic वगैरह वगैरह जैसे कमेंट्स के चक्कर में इस विशेषता को और भी गति मिलती है और इसके उपयोगकर्ताओं की संख्या में रोज ही बढ़ोत्तरी हो रही है। लेकिन इन्हें पता होना चाहिए कि जब बात पसंद की आती है तो लोग वास्तविक सुन्दरता को ही पसंद करते हैं।

इस डिजिटल ब्यूटी पार्लर का एक नकारात्मक पक्ष और भी है। असमानता को बढ़ावा देना। जी हाँ! फेस एप्प का प्रयोग करके तो हम खुद को सुंदर प्रस्तुत करने लगते हैं। सांवले रंग को भी ये एप्प सुंदर बना देता है। सुंदर क्या जी गोरा ही बना देता है। जिससे कि रंग भेद की भावना मन में उत्पन्न हो जाती है। लोगों में गोरे रंग के चहरे के प्रति अहमियत बढ़ जाती है। भविष्य में इसका प्रभाव अवश्य ही देखने को मिलेगा। जब ये त्वचा का रंग भेद इंसान के मन मस्तिष्क में घर कर जायेगा। सांवले रंग के त्वचा के लोग इसके अधिक शिकार हैं और यही नहीं शायद वे त्वचा रंग को लेकर हीनभावना से भी ग्रसित हो सकते हैं। ये एप्प आपके मानसिक स्वास्थ्य पर भी खराब प्रभाव डालते हैं। इसके कारण आपके आत्मविश्वास में भी कमी आ सकती है।



इसी श्रृंखला में हम आगे बात करें तो आपको यह भी ज्ञात होना चाहिए कि कहीं आपके निजता (प्राइवेसी) का तो हनन नहीं हो रहा है। क्योंकि फेसबुक और इंस्टाग्राम जैसे एप्प में कुछ एआई (AI) के मदद से आपके फोटो को अलग रंग रूप में ढाल दिया जाता है। यह साईट कौन चला रहा है? ये कहाँ से चल रहा है? इसकी कोई जानकारी उपलब्ध नहीं होती है। ऐसे में ये खतरा होता है कि कहीं कोई हमारे मोबाइल से अत्यंत महत्वपूर्ण जानकारियों को एकत्रित तो नहीं कर रहा है। इसलिए यदि आप भी सोशल मीडिया के उपभोगता हैं तो इस बात पर विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता है। हमें हैकिंग और साइबर क्राइम के प्रति सजग होने की आवश्यकता है।



श्री इमरान खाटीक
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

बुलंद आवाज

बिखरे हुए लम्हों को समेटना चाहता हूं मैं।
बचा कुछ नहीं बस गुज़रा हुआ वक्त जोड़ना चाहता हूं मैं।

चाहतों से भरी इस दुनिया में कोई अपना चाहता हूं मैं।
ख्वाहिश बस इतनी कि सबके होठों पर अपना नाम चाहता हूं मैं।

अंधेरी गलियों में ढूंढता हूं उजाला बस रोशनी की एक किरण चाहता हूं मैं।
धोखे, फरेब से भरे इस जहां में बस एक सच्चा इंसान चाहता हूं मैं।

बुरा कहो या भला इमरान बस दिल का साफ इंसान है।
आपके साथ मिलकर सब की सोच बदलना चाहता हूं मैं।

मिलता नहीं है वक्त कुछ लिखने को चंद पल जोड़कर कुछ लिखना चाहता हूं मैं।
जात-पात धर्म/मज़हब को भूलाकर भीड़ से भरी बेजान इस दुनिया में एक ज़बान चाहता हूं मैं।

शायद साथ रहकर मिले ना दौलत, शोहरत आगे बढ़कर साथ देने के लिए निःस्वार्थ
साथ चाहता हूं मैं।
चुप्पी तोड़कर हर इन्साफ के लिए दुष्कर्मियों, बलात्कारियों के खिलाफ एक बुलंद आवाज चाहता
हूं मैं



श्री हरी सिंह, आशुलिपिक
उप-कार्यालय, देहरादून

बदरी दर्शन

बहूनि सन्ति तीर्थानि

दिवि भूमौ रसातले ॥

बद्री सदृशं तीर्थं

न भूतो न भविष्यति ॥



देव भूमी उत्तराखण्ड के चमोली जिले में अलकनंदा के किनारे एवं नर और नारायण पर्वतों के बीच बसा है भगवान विष्णु का बैकुंठ लोक, जिसे आज दुनिया बद्रीविशाल के नाम से जानती है। मान्यता है कि जो एक बार भगवान बद्रीनाथ के दर्शन कर ले, उसे दोबारा मां के गर्भ में आना नहीं पड़ता है अर्थात् उसे इस दुनिया में पुनः जन्म नहीं लेना पड़ता है। कहा जाता है कि जिस दिन नर और नारायण पर्वत आपस में मिल जाएंगे उस दिन भगवान विष्णु बद्रीनाथ धाम में ही विलीन हो जाएंगे और अन्य स्थान पर अपने भक्तों को दर्शन देंगे, जो भविष्य बद्री के नाम से जाना जाएगा। बद्रीनाथ धाम भारत के चार धामों में से एक है। जब-जब धरती पर

अधर्म और पाप बढ़ा है, तब-तब अपने भक्तों को कष्टों से उबारने के लिए जगत के पालनकर्ता भगवान विष्णु ने अवतार लिया। जिस तरह से त्रेतायुग का रामेश्वरम, द्वापरयुग का द्वारिका और कलयुग का धाम जगन्नाथपुरी को माना गया है उसी तरह सतयुग का धाम बद्रीनाथ को माना गया है। बद्रीनाथ धाम में भगवान विष्णु बदरी नारायण के रूप में आज भी तप कर रहे हैं। कहते हैं कि यहां जो कोई भी आता है उसकी हर मनोकामना पूरी होती है। बदरी नाथ धाम के कपाट पूजा अर्चना के बाद ग्रीष्मकाल (मई) में श्रद्धालुओं के लिए खुलते हैं और शीतकाल (नवम्बर) में कपाट बंद हो जाते हैं। ग्रीष्मकाल के छह महीनों तक श्रद्धालु भगवान बदरी के दर्शन कर अपना जीवन धन्य करते हैं। कहा जाता है कि शीतकाल में छह महीने देवतागण भगवान बदरी की पूजा उपासना करते हैं। प्रत्येक वर्ष भगवान बदरी के लिए माणा गांव की कुंवारी लड़की कपड़े बुनती है। जिसे स्थानीय भाषा में लवा कहते हैं

भगवान बदरी के दर्शन की उम्मीद लिए मन में आस्था का दीप जलाए हम निकल पड़े। इस मनोरम तीर्थ यात्रा पर। देहरादून से अपनी कार से सपरिवार 16 जून, 2024 में हमने यात्रा प्रारंभ की थी। देहरादून से करीब 400 किलोमीटर दूर चमोली जिले में अलकनंदा के किनारे स्थित है बद्रीनाथ धाम।



हम देहरादून से 40 किलोमीटर की यात्रा के उपरांत ऋषिकेश में थे। ऋषिकेश गंगा के तट पर बसी हुई तीर्थ नगरी है। ऋषिकेश ऋषियों और मुनियों की तपस्थली रही है। ऋषिकेश में लक्ष्मण झूला, राम झूला और जानकी झूला हैं जो गंगाजी को पार करने के लिए ऊपरीपुल का काम करते हैं। ऋषिकेश में कई

प्राचीन मंदिर, धर्मशालाएं और आश्रम के साथ-साथ कई आधुनिक होटल भी हैं। यहां कई आश्रमों में अध्यात्म, ध्यान और योग की शिक्षा दी जाती है। यहां बहुत से विदेशी लोग अध्यात्म और योग की शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते हैं।

हमारी कार ऋषिकेश से आगे की ओर बढ़ने लगी तो गगन चुम्मी पहाड़ नज़र आने लगे। पहाड़ों के बीच बने टेढ़े-मेढ़े रास्ते से हमारी कार सरपट दौड़ने लगी। चारों ओर हरे-भरे पहाड़ों के बीच बहते झरनों के मनमोहक दृश्य प्राकृतिक सौंदर्य में चार चांद लगा रहे थे। मेरी पत्नी पहली बार पहाड़ी रास्तों पर यात्रा कर रही थी। मेरा डेढ़ साल का पोता अथर्व बहुत आनंदित हो रहा था। ऋषिकेश से करीब 45 किलोमीटर की यात्रा के उपरांत बयासी नामक स्थान पर पहुँचे। यहां एक दुकान पर हमने पहाड़ी चाय की चुसकी ली और पकौड़ों का आनंद लेने के पश्चात हमारी कार आगे बढ़ी। 35-36 किलोमीटर की यात्रा करने के पश्चात हम देवप्रयाग नामक स्थान पर पहुँचे। देवप्रयाग तीर्थ नगरी है। यहां अलकनंदा और भागीरथी का संगम होता है।



देवप्रयाग से 35-40 किलोमीटर की यात्रा करने के बाद हम श्रीनगर (गढ़वाल) पहुँचे, जो अलकनंदा तट पर बसा हुआ एक सुंदर शहर है। श्रीनगर से 12 किलोमीटर की दूरी पर अलकनंदा की धारा के बीच मां धारी देवी का मंदिर है। यह मंदिर एक पूजनीय मंदिर है, जो धारी देवी (देवी काली का एक रूप) को समर्पित है, जिन्हें उत्तराखण्ड की संरक्षक देवी माना जाता है और उन्हें चार धामों के रक्षक के रूप में पूजा जाता है।



मंदिर तक पहुँचने के लिए श्रद्धालुओं के लिए ऊपरी पुल का निर्माण कराया गया है। मां धारी देवी गढ़वालवासियों की रक्षा करने वाली देवी मानी जाती हैं। देवी काली को समर्पित मंदिर है। यह मंदिर इस क्षेत्र में बहुत पूजनीय है। लोगों का मानना है कि यहां धारी माता की मूर्ति एक दिन में तीन बार अपना रूप बदलती है। पहले एक लड़की फिर महिला और अंत में बूढ़ी महिला। 16 जून 2013 को इसी दिन सुबह 8 बजे केदारनाथ में भंयकर आपदा आई थी। स्थानीय लोग इस आपदा को मां धारी देवी के क्रोध का परिणाम मानते हैं। कहा जाता है कि जब उत्तराखण्ड सरकार द्वारा बिजली विद्युत परियोजना का रास्ता बनवाने के लिए मां धारी देवी को उनके मूल स्थान से स्थानांतरित किया गया तो इससे

मां धारी देवी कुपित हो गई और उनके क्रोध के चलते ही केदारनाथ धाम में भीषण आपदा आयी थी। इस आपदा में लगभग 6 हजार तीर्थयात्रियों की जान चली गई थी। स्थानीय लोगों के मुताबिक आपदा आने के 2 घंटे पहले मौसम बिल्कुल ठीक था, लेकिन जैसे ही मां धारी देवी के मंदिर को विस्थापित किया गया, उसके कुछ समय बाद केदारनाथ में आपदा आ गई। लोगों का मानना है कि मां धारी देवी उत्तराखण्ड की रक्षक देवी हैं। उनके गुस्से के कारण ही आपदा आई थी।

हम मां धारी देवी के दर्शन के बाद 32 किलोमीटर की यात्रा के उपरांत रुद्रप्रयाग पहुंचे। यहां हमने एक रेस्टोरेंट में दोपहर का भोजन किया। यह अलकनंदा और मंदाकिनी नदियों के संगम पर स्थित है। रुद्रप्रयाग पंच प्रयागों में से एक है। रुद्र प्रयाग को प्राकृतिक सौंदर्य उपहार स्वरूप प्राप्त हुआ है। रुद्र प्रयाग से केदारनाथ धाम के लिए एक मार्ग यहीं से जाता है। 50 किलोमीटर की यात्रा के उपरांत हम चमोली में थे। जिला चमोली अलकनंदा नदी के तट पर स्थित है।

हम चमोली से 30 किलोमीटर की यात्रा करने के बाद कर्णप्रयाग में थे। यह जिला चमोली में स्थित एक सुंदर पहाड़ी कस्बा है। कर्णप्रयाग अलकनंदा एवं पिण्डर नदी के संगम पर बसा है। कहा जाता है कि कर्ण यहां अपने पिता सूर्य की आराधना किया करते थे। यह भी कहा जाता है कि यहां देवी गंगा तथा भगवान शिव ने कर्ण को साक्षात् दर्शन दिया था। कर्ण प्रयाग के समीप एक नौटी गांव है। यहीं से नंदाराज जात यात्रा प्रारंभ होती है। भारत में कई धार्मिक यात्राएं आयोजित की जाती हैं। जैसे- कैलाश मानसरोवर यात्रा, अमरनाथ यात्रा आदि। नंदाराज जात यात्रा उत्तराखण्ड के हिमालयी क्षेत्र की रहस्यमयी यात्रा है। इस यात्रा में हजारों श्रद्धालु भाग लेते हैं। उत्तराखण्ड में जात का मतलब देव यात्रा से है। यह हर 12 वर्ष बाद आयोजित की जाती है जिसे उत्तराखण्ड में कुंभ की संज्ञा दी जाती है। यह यात्रा 280 किलोमीटर की सबसे लंबी यात्रा है जिसमें बीस दिन लगते हैं। कई दुर्गम पहाड़ों, बुग्यालों और गांवों से होती हुई रूप कुण्ड तक जाती है। इस यात्रा की अगुवाई खाडू (चार सींग वाला बकरा) करता है। जिसकी पीठ पर नंदा देवी के कपड़े, गहने और श्रृंगार का सामान आदि लादे जाते हैं। रूप कुण्ड के पास खाडू को मुक्त कर दिया जाता है जो हिमालय पर्वत की ओर चला जाता है और रहस्यमय तरीके से गायब हो जाता है। बताते हैं कि इस यात्रा की शुरुआत सातवीं सदी से हुई थी। जब इस क्षेत्र में आदिशंकराचार्य

का आगमन हुआ था। जिन्होंने देश में चार मठों की स्थापना की थी। प्रतीकात्मक रूप से नंदा देवी की कास्य प्रतिमा को नये-नये वस्त्रों और आभूषणों से सजाकर मायके से उनके ससुराल (शिव के धाम) के लिए डोली में बैठाकर लड़की की तरह विदा किया जाता है। नंदा देवी गढ़वाल और कुमाँऊ की ईष्ट देवी मानी जाती है।

कर्णप्रयाग- ऋषिकेश रेल परियोजना का अंतिम स्टेशन बन रहा है। ऋषिकेश से कर्ण प्रयाग के बीच रेल लाइन का काम चल रहा है। जगह-जगह सुरंगें बनायी गई हैं। ऋषिकेश से कर्ण प्रयाग के बीच 124 किलोमीटर का रेल मार्ग लगभग बनकर तैयार हो गया है। कर्ण प्रयाग से ऋषिकेश के बीच वर्ष 2025 तक रेलगाड़ी चलने की संभावना है। इस रेल परियोजना से तीर्थ यात्रियों और स्थानीय लोगों को बहुत सुविधा होगी। नंदप्रयाग, विष्णु प्रयाग, पीपल कोठी और हेलंग को पार करते हुए हम जोशी मठ में थे। जोशी मठ का पुराना नाम ज्योर्तिमठ था। आठवीं सदी में यहां आदिशंकराचार्य ने जोशी मठ की स्थापना की थी। जोशीमठ में जगह-जगह बच्चे और औरतें फल बेच रहे थे। वे “पहाड़ी फल ले लो साहिब ... पहाड़ी फल ले लो साहिब” की आवाज लगाकर फल बेच रहे थे, जिसे स्थानीय भाषा में चीलू कहते हैं। हमने एक बच्चे से कुछ फल खरीदे और कार में बैठे-बैठे फलों का आनंद लिया जो स्वाद में खुमानी जैसा था। 20 किलोमीटर की यात्रा के उपरांत हम गोविंद घाट में थे। गोविंद घाट से 18 किलोमीटर की दूरी पर हेम कुण्ड साहिब है यह सिक्खों का पवित्र तीर्थ स्थल है। गोविंद घाट से हेम कुण्ड साहिब के लिए पैदल यात्रा करनी पड़ती है। यहां हमें बहुत सारे सिक्ख तीर्थ यात्री दिखायी दिए। गोविंद घाट से फूलों की घाटी 19 किलोमीटर की दूरी पर है तथा 16 किलोमीटर की दूरी पर औली है। यहां पर्यटक बर्फबारी का आनंद लेने के लिए आते हैं।

करीब 25 किलोमीटर की यात्रा के उपरांत अब हम बद्रीनाथ पहुँच गए थे। रात के 10 बजे चुके थे। कार पार्किंग करने के उपरांत अब हम नारायण पैलेस होटल पहुँच गए थे। सुबह 6 बजे हमने स्नान आदि करके बदरी नारायण मंदिर की ओर पैदल-पैदल चल पड़े जो हमसे चंद कदमों की दूरी पर था। केवल 20 मिनट पैदल चलने के बाद मंदिर के प्रांगण में पहुँच गए थे। मंदिर कत्यूरी शैली में बना है, जिसकी खूबसूरती देखते ही बनती है। मंदिर के कपाट प्रातः 4 बजे

श्रद्धालुओं के लिए खोल दिए जाते हैं। सुबह से ही श्रद्धालु बदरी नारायण के दर्शन के लिए पहुँचने लगते हैं। बदरी नारायण का धाम अलकनंदा के तट पर स्थित है। हमने प्रसाद लिया और दर्शन हेतु अपनी बारी का इंतजार करने लगे। प्रसाद में वनतुलसी की माला, चने की दाल, गोले की गिरी और मिश्री आदि का प्रसाद चढ़ाया जाता है। कुछ समय के बाद अब हम बदरी नारायण की भव्य प्रतीमा के सामने थे। यहां फोटो खींचने की मनाही थी इसलिए हमने हमेशा-हमेशा के लिए बदरी नारायण को अपने मन मस्तिष्क में बैठा लिया। बदरी नारायण की प्रतमा को छूने का किसी को अधिकार नहीं है। यहां के मुख्य पुजारी को भगवान की प्रतीमा छूने का अधिकार है जो केरल के नंबुथरी ब्राह्मण होते हैं जिन्हें रावल कहा जाता है। इसके पीछे तर्क यह है कि आठवीं सदी में आदिशंकराचार्य ने बदरी नारायण की मूर्ति की पुनर्स्थापना की थी, तब से नंबुथरी ब्राह्मण ही भगवान को छू सकते हैं। भक्त मंदिर में बदरीनाथ की मूर्ति के सामने पूजा करने के साथ-साथ तप्त कुण्ड में डुबकी लगाते हैं। प्रचलित धारणा है कि इस कुंड में डुबकी लगाने से व्यक्ति की आत्मा शुद्ध हो जाती है।

बदरीनाथ के दर्शन के उपरांत हमने माणा गांव की ओर रुख किया। बदरीनाथ से 4 किलोमीटर की दूरी पर स्थित माणा गांव है। माणा गांव सरस्वती के तट पर बसा हुआ एक छोटा सा सुन्दर गांव है। कहते हैं कि यहां से धरती का स्वर्ग निकलता है। **यह भारत का प्रथम गांव** है। इसके बाद चीन की सीमा लग जाती है। इस गांव में भूतानिक लोग रहते हैं जिनकी मुखमुद्रा तिब्बती लोगों से मिलती है। ये लोग स्वभाव से सीधे और सरल होते हैं। 1962 तक यहां के लोगों का व्यापार तिब्बत से होता था। कहा जाता है कि जो व्यक्ति इस गांव की एक बार यात्रा कर लेता है तो उसे अपने जीवन में कभी भी रुपए पैसे की कमी नहीं होती है। यहां गणेश गुफा, व्यास गुफा और भीम पुल है जो अपने आप में एक पौराणिक इतिहास समेटे हुए हैं। यहां से 25 किलोमीटर की दूरी पर सतोपंथ झील और वसुधारा 4 किलोमीटर की दूरी पर है। माणा गांव से स्वर्गारोहण का मार्ग जाता है यहां से मनुष्य सशरीर स्वर्ग को जा सकता है। एक मान्यता के अनुसार पांच पांडव यहीं से स्वर्ग को गए थे। महाभारत के एक प्रसंग के अनुसार युधिष्ठिर और उनका कुत्ता ही सशरीर स्वर्ग तक गए थे। सतोपंथ झील का पानी इतना साफ है कि एक-एक कण गिना जा सकता है। कहा जाता है कि देवतागण यहां आकर स्नान करते हैं। अगर एक तिनका भी इस झील में गिरता है तो यहां के दिव्य पक्षी उठाकर बाहर कर देते हैं। एक पौराणिक

मान्यता के अनुसार महर्षि वेदव्यास ने महाभारत की रचना इसी स्थान पर की थी। महर्षि वेदव्यास ने भगवान ब्रह्मा से कहा कि मेरे मन में एक ग्रंथ की रचना है, लेकिन कोई भी मनुष्य इसे लिपिबद्ध करने में सक्षम नहीं है। ब्रह्मा जी ने कहा कि गणेशजी ही इसे लिपिबद्ध कर सकते हैं। महर्षि वेदव्यासजी ने गणेशजी का आह्वान किया। गणेशजी ने यह शर्त रख दी कि मेरी लेखनी एक मिनट भी नहीं रुकनी चाहिए। वेदव्यासजी बोलते गए और गणेशजी गति के साथ लिखते रहे। इस तरह गणेशजी ने महाभारत को लिपिबद्ध कर दिया। गणेशजी को आशुलिपि का प्रथम ज्ञाता माना जाता है। यह थी हमारी बदरीनाथ दर्शन की मनोरम तीर्थ यात्रा जिसकी यादों का खजाना लेकर हम लौट आए।



सुश्री फातेमा हवेलीवाला
लेखापरीक्षक

दोस्ती की कहानी अजनबियों को है सुनानी

दोस्ती की कहानी अजनबियों को है सुनानी,
दोस्ती की कहानियाँ तो कहीं सुनी होंगी,
आज एक किस्सा मेरा भी,
बोर न होंगे गौर देके सुनना ए अजनबी...
किस्सा तो क्या एक कहानी ही है, मेरी अपनी नहीं मेरे यारों की है,
उनके जिंदगी से कुछ पल चुरा कर मैंने अपने लिए,
वो माने या ना माने वो मेरे दोस्त बन गए...
है वो कहीं गिनती में, दोस्त ही कहते थे सबको,
शकल, सीरत और उमर से काफ़ी अलग थे,
पर जब मिलते तो एक से लगते सब हमको...

कुछ को बचपने में चिढ़ा देते,
कुछ से लड़ झगड़ मन रुसवा कर लेते थे,
कुछ से गहरी यारी थी और कुछ से दूरी प्यारी थी!
घंटों की बातें और मुलाकातें, वो मस्ती भरी शरारत,
वो बेझिझक एक दूसरे से कुछ भी कह जाना,
इन लम्हों का एक-एक पल आज भी याद आना...

दोस्ती सालों की नहीं लम्हों की थी,
कुछ पल की ही सही पर वो अपनी थी,
यादों में सजा रखा है उन लम्हों को,
यादें हैं भले फिर दोस्ती हो ना हो...

जान पहचान वालो की मुलाकात में अजनबी से दोस्ती कर लेते हैं,
वो जो अंजान हमसे दूर है बैठे,
हंस खिलखिलाकर हमारे दोस्त बन जाते हैं...

तुमको भी मौका है यूँ अजनबी ना रहो,
एक कदम को तुम चलो एक नया दोस्त आज तुम बना लो,
दोस्ती करने का कोई फॉर्मूला नहीं है,
पर किसी तीसरे की बुराई से बेहतर तरीका नहीं है!

कहानी का एक हिस्सा मैंने बता दिया,
दूजा हिस्सा तू सुना दे मेरे यारा!

कार्यालय में आयोजित हिंदी पखवाड़ा समारोह













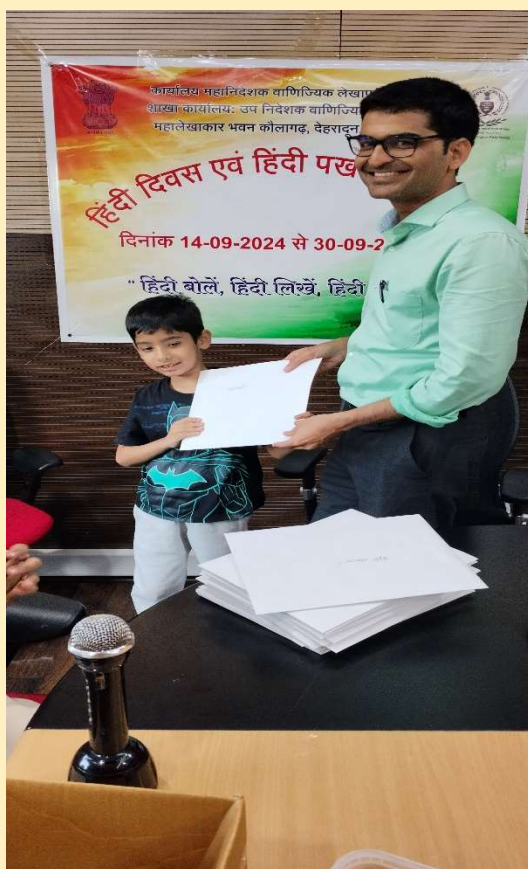


उप-कार्यालय, देहरादून में आयोजित हिंदी दिवस की कुछ झलकियां



हिंदी दिवस के दौरान चित्रकला प्रतियोगिता में बच्चों द्वारा बनाई गई तस्वीरें





सेवानिवृत्ति

श्री अर्जुन सोमा आंगणे, वरिष्ठ लेखापरीक्षक अपना सेवा काल पूर्ण करने के पश्चात दिनांक 31/07/2024 को सेवानिवृत्त हुए।







सेवानिवृत्ति

श्री संजय आर कोटलगी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी अपना सेवा काल पूर्ण करने के पश्चात दिनांक 30/09/2024 को सेवानिवृत्त हुए।





कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम), मध्य प्रदेश
ऑडिट भवन, झॉसी रोड, खालियर

क्रमांक/प्रशासन/हिंदी कार्यान्वयन कक्षा/सम्मति/ जावक-

दिनांक: 03-10-2024

प्रति,

हिंदी अधिकारी,

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई,

बांद्रा पूर्व, मुंबई

विषय - हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के सोलहवें संस्करण की प्राप्ति पर सम्मति पत्र के प्रेषण के संबंध में

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के सोलहवें संस्करण की प्राप्ति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है। पत्रिका की साज-संज्ञा उत्कृष्ट है। पत्रिका में प्रकाशित समस्त रचनाएं पठनीय, रोचक एवं उच्चकोटि की हैं, जिसके लिए सभी रचनाकारों को साधुवाद। श्री सचिन चौहान द्वारा रचित लेख 'भारत में घरेलू पर्यटन', श्री अरुण कुमार साव द्वारा रचित लेख 'चौ पुराने दिन' एवं श्री रवि कुमार द्वारा रचित लेख 'मां के बिना' अत्यंत सराहनीय हैं।

पत्रिका के उच्चतम भविष्य की कामना सहित सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल संपादन हेतु हार्दिक बधाई।

भवदीय,

SANJEEV KUMAR JHANJHI

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

हिंदी कक्षा

विज्ञा
वा.वा.प.
9/10/24
सं.
2/11/24

E-N0/2288531/Admn
09 OCT 2024



SUPREMACY OF THE CONSTITUTION OF INDIA
(सर्वोच्चता के संवैधानिक)
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171 003
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&R)
HIMACHAL PRADESH, SHIMLA-171 003

सं. हि.क./ले.व.ह./पत्रिका समीक्षा/2024-25/153

दिनांक- 01.10.2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
सी-25, ऑडिट भवन, आठवीं मंजिल,
बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स, मुंबई-400051

विषय : आपके द्वारा प्रेषित तिमाही हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 16वें संस्करण की ई-प्रति की पावती।

महोदय/महोदया,

उपरोक्त विषय पर आपके द्वारा प्रेषित तिमाही हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 16वें संस्करण की ई-प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं जानवर्धक हैं। हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका प्रयास सराहनीय है जिसके लिए आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है।

आशा है पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ पर्याप्त अर्थिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उच्चतम भविष्य की शुभकामनाएँ।

भवदीय,

E-N0/2289222/Admn

10 OCT 2024

महानि. के.क.स. विनिर्देशन, शिमला-171 003 फ़ोन: 0177-2614934, फ़ैक्स: 0177-2814934
Gorton Castle Building, Shimla-171 003 Phone: 0177-2614934, Fax: 0177-2814934
E-mail: aga@himachalpradesh.org

विज्ञा
वा.वा.प.

सं.
2/11/24

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी)



भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
महानिदेशक लेखापरीक्षा (खान) का कार्यालय, पश्चिम बंगाल
Indian Audit & Accounts Department
Office of the Director General of Audit (Mines), West Bengal



स.नो - डीजीएलएम/रा.अ.हि.पत्रिका/पावती/2024-25/308
दिनांक/Date : 03.10.2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
मुंबई- 400051

विषय:- हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" का 16वां अंक की पावती के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" का 16वां अंक प्राप्त हुआ, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ अत्यंत मनमोहक है तथा इसकी आंतरिक साज-सज्जा भी आकर्षक है।

पत्रिका में सम्मिलित सभी लेख, कविता, कहानी, संस्मरण आदि ज्ञानवर्धक और रोचक हैं। सुश्री पूजा साव की "हिन्दी के प्रचार प्रसार में विज्ञापन की भूमिका", श्री रवि कुमार की "माँ के बिना", श्री अमरनाथ गुप्ता की "भारतीय स्वतंत्रता संग्राम एवं बाबू वीर कुंवर सिंह", विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

सारांशतः राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में इस पत्रिका ने अपनी महती भूमिका का निर्वोह किया है। पत्रिका भविष्य में भी अपने लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर हो, ऐसे कर्मन्वा है।

E-NO/2289264/Admn
10 OCT 2024

भवदीय,

हिंदी अधिकारी
राजभाषा अनुभाग

1, काउंसिल हाउस स्ट्रीट, कोलकाता - 700 001
1, Council House Street, Kolkata - 700 001

दूरभाष/Telephone :- महानिदेशक/Director General : 2248-9674, निदेशक/ Director : 22480379, उप निदेशक/
Deputy Director : 2262-2645, व, लेखापरीक्षा अधिकारी/Sr. Audit Officer: 2248-5379, 2248-5600, 2248-
1506, 2248-9503, 22481505, सचिव/Secretary : 2210-8247 फैक्स/FAX : (033) 2243-5777
ई-मेल/E-mail : pdamini@icai.gov.in



प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा - वाणिज्यिक
का कार्यालय बेंगलूर-560001
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF
AUDIT DEFENCE- COMMERCIAL, BENGALURU-560001.

हि.प्रशा.2024/25/119

दिनांक - 30.09.2024

सेवा में,

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन),
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
सी-25, 8 वीं मंजिल, ऑडिट भवन बीकेसी बांद्रा,
पूर्व मुंबई - 400051

विषय:- प्रशास पत्र।

महोदय /महोदया,

आपके कार्यालय की हिन्दी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" का 16 वां अंक की प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।

धन्यवाद,

भवदीय,

हिन्दी अधिकारी

विद्या
नाल 24

E-NO/2273092/Admn
04 OCT 2024

विद्या
नाल 24

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर

क्रमांक: रा.भा.अ./एच-11005/02/2024-25/

दिनांक: 25-09-2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन),
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
मुंबई-400051

विषय :- तिमाही हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 16वें अंक पर अभिमत - संबंधित।
महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित तिमाही हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 16वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। आपकी पत्रिका के आकर्षक आवरण पृष्ठ के साथ-साथ इसकी साज-सज्जा सुंदर है और रचनाओं की विषयवस्तु भी प्रशंसनीय है।

"लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के संपादक मंडल एवं सभी रचनाकारों को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई तथा पत्रिका की प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

WAZIR SINGH

हिंदी अधिकारी

(ई-मेल-rajbhasha.raj2.au@cag.gov.in)

E-N0/2256713/Admin
27 SEP 2024

लिखा
संवाप्य

27.9.24

Signed by Wazir Singh
Date: 25-09-2024 10:34:09



दूरभाष/Telephone-0612-2225634
फैक्स/Fax 0612-2221056

ई-मेल/E-mail-agaebihar@cag.gov.in
वेबसाइट/Website- https://cag.gov.in/ae/bihar/en

महालेखाकार (ले० एवं ह०) का कार्यालय, बिहार, पटना
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E), BIHAR, PATNA

पत्रांक-हिं.अ./ले. व हक./5/पत्रिका प्रतिभाव/24-25/53
दिनांक- 18.09.2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन),
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
मुंबई- 400051

विषय: हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 16वें अंक की अभिसूचीकृति एवं प्रतिक्रिया।

महोदय/महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित उक्त विषयक हिंदी गृह पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 16वें अंक के ई-संस्करण की प्रति ईमेल के माध्यम से प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष आभार व्यक्त करते हैं। राजभाषा हिंदी के विकास में योगदान स्वरूप पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" का ई-संस्करण डिजिटल रूप में आज सहजता से सभी पाठकों के हाथों में पहुँच चुका है जो स्वयं में एक विकास क्रांति है। पत्रिका की साज-सज्जा, विषय एवं आवरण पृष्ठ स्वतः ही पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हैं। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ न केवल उच्चकोटि की जानकारीपूर्ण, प्रेरणादायी व पठनीय हैं अपितु सामाजिक पक्षों से जुड़े कई संदेश भी देती हैं। आशा ही नहीं अपितु मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक की भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के उत्तम संपादन हेतु पत्रिका परिवार बधाई का पात्र है। पत्रिका के सतत प्रकाशन एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

E-N0/2256811/Admin
27 SEP 2024

भवदीय,

लिखा
संवाप्य

27.9.24

सुनील कुमार
हिंदी अधिकारी/हिंदी अनुभाग

वीरचंद पटेल पथ, पटना-800001

Veerchand Patel Path, Patna-800001

कार्यालय- प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपुर
O/o the Principal Accountant General
(Audit)-II, Maharashtra, Nagpur-440001

सं.हिंदी अनुभाग/प्रतिक्रिया/20/2024-25/जा.क्र.6+

दिनांक: -13/09/2024

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)
कार्यालय- महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
महाराष्ट्र, मुंबई- 400051

विषय:- हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 16वें अंक की प्रतिक्रिया के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 16वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएँ, उत्कृष्ट एवं जानकारीपूर्ण हैं। विशेषकर निम्नलिखित रचनाएँ उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं।

क्र.	नाम	रचनाएँ
1.	सुश्री पूजा साव, क. अनुवादक	हिंदी के प्रचार-प्रसार में विज्ञापन की भूमिका
2.	श्री शरद धनगर, व.ले.प.	प्रकृति मेरी शिक्षक है
3.	श्री रवि कुमार, लेखापरीक्षक	माँ के बिना....
4.	श्री अमरनाथ गुप्ता, स.ले.प.अ.	भारतीय स्वतंत्रता संग्राम एवं बाबू वीर कुंवर सिंह

पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
DINESH

HARIRAM MATE

उ.स.ले. (प्र)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखापरीक्षा),झारखण्ड, रांची

पत्रांक- रा.भा.अनु./ले.प./पत्रिका/2024-25/112

दिनांक:17-09-2024

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
मुंबई-400051

विषय - हिन्दी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 16वें अंक की ई-प्रति की पावती के प्रेषण।

महोदय,

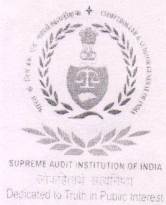
आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 16वें अंक की ई-पत्रिका की प्राप्ति हुई है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ उच्च श्रेणी की हैं। विशेषकर "हिंदी के प्रचार-प्रसार में विज्ञापन की भूमिका", "प्रकृति मेरी शिक्षक है", "माँ के बिना.....", "भारत के घरेलू पर्यटन" आदि रचनाएँ अत्यंत ही उच्च श्रेणी की हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
Signed by Shailendra Nath
Das
Date: 17-09-2024 16:09:58
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
राजभाषा अनुभाग

विज्ञा
रक्षित

22/9/24 PS



कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी., सेक्टर 17-ई, चंडीगढ़ - 160017.
Office of The Accountant General (A&E),
Punjab & U.T., Sector-17 E,
Chandigarh - 160017.

Phone: 0172-2702906, 2703117,
2709576, Fax - 0172-2702286
Mail: agaeupunjab@cag.gov.in



क्रमांक - हिंदी कक्ष/समीक्षा/10/2024-25/347

दिनांक-09.09.2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
सी-25, ऑडिट भवन, 8वां तल,
बांद्रा कुर्ला, काम्प्लेक्स, बांद्रा (पूर्व) मुंबई-400051

विषय - विभागीय हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 16^{वें} अंक की पावती के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 16^{वें} अंक की प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी मनमोहक हैं। पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादकीय परिवार ने पूर्ण प्रयास किए हैं। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

भवदीय

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी

विशेष
लक्षणा

E-N0/2229956/Aelmin

19 SEP 2024

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ



INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
Office of the Principal Director of Audit (Central) Lucknow

पत्रांक प्र.म.नि.के./प्रशासन/रा.भा.हि.फा.सं.82047/2024-25/1737030/2024 दिनांक: 18-09-2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी / प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
मुंबई - 400051

विषय:- तिमाही हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 16 वें अंक की ई-प्रति के सम्बन्ध में।

आदरणीय महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित तिमाही हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 16 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है।

पत्रिका का यह अंक साज-सज्जा एवं मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक एवं मनोहारी बन पड़ा है साथ ही पत्रिका में समाविष्ट रचनाएं "भारतीय स्वतंत्रता संग्राम एवं बाबू वीर कुंवर सिंह", "हिन्दी के प्रचार-प्रसार में विज्ञापन की भूमिका" एवं "वो पुराने दिन" ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी एवं पठनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट अन्य सभी रचनाएँ अत्यंत प्रेरक, रचिकर एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकारों का हार्दिक अभिनन्दन एवं शुभकामनाएं।

भवदीय,

Signed by Rajesh Kumar
Swyambhu

Date: 18-09-2024 11:40:32

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी / प्रशासन

E-N0/2229917/Aelmin
19 SEP 2024

विशेष
लक्षणा

प्रीति कक्ष, ऑडिट भवन, टी-सी-35-वी-1, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (उ.प्र.) दूरभाष : 0522-2970789, फैक्स : 0522-2970780 (उ.प्र.)
3rd Floor, Audit Bhawan, T.C.-35-V-1, Vibhuti Khand, Gomti Nagar, Lucknow-226010 (U.P.) Phone: 0522-2970789, Fax: 0522-2970780 (PD)

क/ला/PS
19/9/24

कार्यालय प्रधान महालेखाकार,
लेखापरीक्षा (II), पश्चिम बंगाल
सीटीओ कॉम्प्लेक्स (5वीं मंजिल), लैफ-इस्ट, 1
सेक्टर-1
साई-लैक सिटी
कोलकाता - 700 064



OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL,
AUDIT (II),
WEST BENGAL
CGO COMPLEX (5TH FLOOR), DF-BLOCK,
SECTOR-1
SAI-LAKE CITY
KOLKATA - 700 064

संख्या :- हिंदी कक्ष/पत्रिका पावती/76

दिनांक:- 19/09/2024

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन,
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई,
मै 25, 8 वीं मंजिल, ऑडिट भवन, बीके सी, बांद्रा पूर्व, मुंबई - 400 051

19 SEP 2024

To,
The Senior Audit Officer/Admin
Office of the Director General Commercial Audit-I, Mumbai
C-25, Audit Bhavan, Bandra Kurla Complex, Bandra East, Mumbai-400051

19 SEP 2024

विषय: कार्यालय की तिमाही हिंदी पत्रिका लेखापरीक्षा ज्ञानोदय के 16 वें अंक के प्रेषण के संबंध में।
महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित तिमाही हिंदी पत्रिका लेखापरीक्षा ज्ञानोदय के 16 वें अंक की प्राप्ति हुई।
पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र
अत्यंत आकर्षक और मनमोहक हैं। साथ ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं एवं लेख भी
भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगीं वो हैं - प्रकृति मेरी शिक्षक है,
हा वो मेरी माँ है, वो पुराने दिन तथा माँ के बिना आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के
उज्जवल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिये बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

भवदीय,

सु. साँ 19/9/24

व, लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष

विद्या
25/9/24

E-NO/2248852/Admin
25 SEP 2024

सु. साँ
25/9/24

G-10



सत्यमेव जयते

भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) छत्तीसगढ़, रायपुर
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
Office of Principal Accountant General (Audit) Chhattisgarh, Raipur

क्र./हिंदी कक्ष/पावती/2023-24/जा.- 360

दिनांक :

Date : 12-09-2024

प्रति,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन
भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई
ऑडिट भवन, बांद्रा-कुर्ला, मुंबई-400051

विषय:- तिमाही हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 16वें संस्करण का प्रेषण।
संदर्भ :- सं.डी.जी.सी.ए/प्रशा./का.प./2/437 दिनांक 02-09-2024

महोदय/महोदया

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित तिमाही हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय"
के 16वें संस्करण की ई-पत्रिका प्राप्त हुई। पत्रिका का यह अंक भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार
। भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणा दायक हैं। इस पत्रिका में
सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी
रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका
की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

(सजनी एस. अब्राहम)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी कक्ष

E-NO/2227036/Admin
18 SEP 2024

विद्या
18/9/24

सु. साँ

पोस्ट - विधानसभा, जीरो प्वाइंट, रायपुर - 492005 (छत्तीसगढ़)

Post - Vidhansabha, Zero Point, Raipur - 492005 (Chhattisgarh)

फोन/Phone : 0771-2281401 • फैक्स/Fax : 2582505 • ईमेल/Email : agauchhattisgarh@cag.gov.in

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) म.प्र.
53, अरेरा हिल्स, नर्मदापुरम रोड, भोपाल- 462011
क्र.हि.क./फा-7/ जावक -36 दिनांक 11.09.2024

प्रति,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
मुंबई-400051

विषय : तिमाही हिन्दी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 16वें अंक पावती बाबत ।
संदर्भ : आपके पत्र स.डी.जी.सीए/प्रशा./का .प./2/ 66 दिनांक 02.09.2024 ।

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 16वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद । पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय हैं विशेष तौर पर विश्व का सबसे छोटा देश: सीलैंड, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम एवं बाबू वीर नुँवर सिंह, हिन्दी के प्रचार-प्रसार में विज्ञापन की भूमिका, वो पुराने दिन, मां के बिना, आदि रचनाएँ सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

22/9/24
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी कक्ष

विद्या
12/9/24
प.प.
12/9

(E 2212325 - 12/9/24)

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
20, सरोजिनी नायडू मार्ग, प्रयागराज -



REGIONAL CAPACITY BUILDING & KNOWLEDGE INSTITUTE
Indian Audit & Accounts Department
211001 20, Sarojini Naidu Marg, Prayagraj - 211001

पत्रांक- क्षे.क्ष.नि.ज्ञा.सं.(प्र.)पत्रिका पावती(132)/2024-25/ 256

दिनांक : 11.09.2024

सेवा में,

वरि. ले. अधिकारी (प्रशासन)
कार्यालय- महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
मुंबई - 400051

विषय:- हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 16वें अंक की पावती।

संदर्भ:- ईमेल से प्राप्त पत्र दिनांक 03.09.2024

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 16 वें अंक की प्राप्ति हुई। इसके लिए सादर धन्यवाद ।

पत्रिका का कलेवर आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। विशेषकर 'हिंदी के प्रचार-प्रसार में विज्ञापन की भूमिका', 'हां वो मेरी माँ है' एवं 'माँ के बिना' विशेष रूप से सराहनीय हैं। पत्रिका में सम्मिलित कार्यालयीन गतिविधियों की झलकियां पत्रिका की शोभा को और बढ़ा रही हैं।

पत्रिका के बेहतरीन संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

22/9/24
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/सलाहकार

(E 2212264 - 12/9/24)

Email

Admin Section PDCA Mumbai

हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 16वें संस्करण की प्राप्ति - के संबंध में।

From : Hindi Cell PDA C Bengaluru
<hindicellpdc.kar1.au@cag.gov.in>

Thu, Sep 05, 2024 04:39 PM

Subject : हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 16वें संस्करण की प्राप्ति - के संबंध में।

To : Admin Section PDCA Mumbai
<admin.mum.pdca@cag.gov.in>

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 16वें संस्करण की प्राप्ति हुई, जिसके लिए आपको धन्यवाद। प्रकाशित सभी रचनाएँ रोचक व उच्च कोटि की हैं। पत्रिका का मुख-पृष्ठ, साज-सज्जा तथा विषयों की प्रस्तुति अत्यंत सुंदर है। साथ ही, मौलिक सोच तथा सृजनोत्प्रेरकता की सुंदर अभिव्यक्ति इसमें दृष्टिगत होती है। राजभाषा हिंदी की प्रगति में 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' इसी तरह सतत योगदान देती रहे, इसी शुभकामना के साथ समस्त रचनाकारों एवं संपादक मंडल को ढेर सारी बधाइयाँ एवं शुभकामनाएँ।

धन्यवाद सहित

राजभाषा अनुभाग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)
बेगलूर

Rajbhasha Anubhag
Principal Director of Audit (Central)
Bengaluru

75
Azadi Ka
Amrit Mahotsav

विभा
हास

(E 2198173 - 6/9/24)

9/9/24
वि.स.
वि.स.

वि.स.



प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, ओडिशा, पुरी शाखा, पुरी-752003
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), ODISHA, PURI BRANCH, PURI

सं.-प्रसंसा पत्र/09/2024-25/41

दिनांक:- 10/09/2024

सेवा में,

वर्गिष्ठ महालेखा अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय प्रधाननिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
मुंबई-400 051

विषय : तिमाही हिन्दी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 16वें संस्करण की प्राप्ति।

महोदय,

आपकी तिमाही हिन्दी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 16वें संस्करण की प्राप्ति हुई। धन्यवाद।

"लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" उत्कृष्ट रचनाओं का सुन्दर संग्रह है। पत्रिका के मुख्य पृष्ठ सहित अन्य कार्यक्रमों के चित्र अत्यंत सुखद व अनुभूतिपूर्ण होने के साथ-साथ पत्रिका को और अधिक सुंदरता प्रदान कर रहे हैं। पत्रिका में निहित संपूर्ण रचनाएँ पठनीय, रोचक, ज्ञानवर्धक एवं महत्वपूर्ण संदेशों से परिपूर्ण हैं। इनमें से "भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम एवं बाबू वीर कुंवर सिंह", "बो पुराने दिन", "प्रकृति मेरी शिक्षक है" और "माँ के बिना", विशेष अच्छी हैं। आशा है कि यह पत्रिका आगे भी अपने रोचक विषयों से पाठकों का ज्ञानवर्धन एवं राजभाषा के प्रचार-प्रसार में मार्थक मंच उपलब्ध कराती रहेगी।

पत्रिका के संपादक मण्डल के सभी सदस्यों एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

वि.स.
10/9/2024
(सुदर्शन साहू)

वरिष्ठ लेखा अधिकारी, हिन्दी कक्ष

विभा
हास

वि.स.
10/9/24

वि.स.

(E-2217479 - 13-09-24)



कार्यालय महालेखाकार (ले० एवं हक०) उत्तराखण्ड



"महालेखाकार भवन", कौलागढ़, देहरादून-248195

पत्रांक: 26/हि०प्र०/2024-25/विभागीय पत्रिकाएं/पावती/199

दिनांक: 09.09.2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई
सी-25, ऑडिट भवन, 8वां तल, बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स,
मुंबई-400051

विषय:- तिमाही हिंदी ई-पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 16वें अंक की प्राप्ति के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा भेजित हिंदी ई-पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' का 16वां अंक प्राप्त हुआ।
सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक हैं। प्रस्तुत अंक सराहनीय, पठनीय एवं
संग्रहणीय है तथा राजभाषा की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु एक सार्थक प्रयास है।

पत्रिका के उत्तम संयोजन एवं संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल
प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया
हिंदी अधिकारी 9/9/24

विभा
उपाध्य

9/9/24

(E-2217399-13-09-24)

9/9/24

 सत्यमेव जयते	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हरियाणा, प्लॉट नं. 5, सेक्टर 33-बी, दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020 OFFICE OF THE PR. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT), HARYANA PLOT NO.5, SECTOR 33-B, DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020	
------------------	---	--

सं. हिंदी कक्षा/पत्रिका/प्रतिक्रिया/2024-25/171

दिनांक: 06.09.2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन,
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
मुंबई-400 051

विषय:- तिमाही हिंदी ई-पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 16वें संस्करण का प्रेषण।

महोदय,

आपके पत्र संख्या: डीजीसीए/प्रशा/का.प./2/437 दिनांक: 02.09.2024 द्वारा तिमाही हिंदी
ई-पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 16वें संस्करण की प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में
समाहित सभी रचनाएं उच्च कोटि की हैं। रचनाओं के मध्य छायाचित्र अत्यन्त सार्थक, सुन्दर एवं
विषयानुसूल हैं। विशेष रूप से 'भारतीय स्वतंत्रता संग्राम एवं बाबू वीर कुंवर सिंह', 'हिंदी के प्रचार-प्रसार में
विज्ञापन की भूमिका', 'प्रकृति मेरी शिक्षक है', 'मां के बिना...', तथा 'भारत में घरेलू पर्यटन' आदि रचनाएं
अत्यन्त ज्ञानवर्धक व प्रेरणादायक हैं। उत्कृष्ट संयोजन एवं संपादन के लिए संपादक मंडल बधाई के
पात्र हैं।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया
हिंदी अधिकारी
(हिंदी कक्षा)

विभा
उपाध्य

9/9/24

(E-2217447-13-09-24)

9/9/24

दैन्यवाद